International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 8, August 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

एकात्म मानववाद एक समीक्षात्मक अवलोकन

डॉ कमलेन्द्र कुमार
एम. ए., नेट, पीएचडी (दर्शन शास्त्र)

एकात्म मानववाद पंडित दीनदयाल उपाध्याय की भारत को एक अनुपम भेंट है, जिसके माध्यम से उन्होंने भारत की तत्कालीन राजनीति, बुद्धिजीवी वर्ग तथा समाज को उस दिशा में मोड़ने की सलाह दी जो शत प्रतिशत भारतीय अध्यात्म दर्शन एवं संस्कृति से निःश्रत है। एकात्म मानववाद के दर्शन का प्रतिपादन 22, 23, 23, 25 अप्रैल 1965 ई0 को पूना में दिए उनके भाषणमाला का परिणाम है। इस भाषण में उन्होंने मानव की सम्पूर्ण सृष्टि के साथ संबंध पर एक व्यापक दृष्टिपात करने का काम किया। वे मानव को विभाजित करके देखने के पक्ष में नहीं थे, वे मानवमात्र का हर उस दृष्टि से मूल्यांकन करने की बात करते हैं जो उसके सम्पूर्ण जीवनकाल में छोटी अथवा बड़ी जरूरत के रूप से संबंध रखता है। दुनिया के इतिहास में सिर्फ मानवमात्र के लिए अगर किसी विचारधारा ने समग्रता से से विचार किया तो वह एकात्म मानववाद का दर्शन है।

पंडित जी के अनुसार शासन का उद्देश्य अंत्योदय की परिकल्पना के अनुरूप होना चाहिए, समाजवादी नीतियों से प्रेरित हो तत्कालीन सरकारों ने व्यापार जैसे कार्य भी अपने हाथों में ले लिया जो राज्य के लिए बेहद घातक साबित हुआ। पंडित जी इसके सख्त खिलाफ थे। उनका स्पष्ट मानना था कि शासन को व्यपार नहीं करना चाहिए और व्यापारी के हाथ में शासन नहीं आना चाहिए। साठ के दशक में उन्होंने अपने लेखों के माध्यम से जो चिंताएं व्यक्त की वो आज हमारे भ्रष्टाचार के रूप में स्पष्ट दृष्टिगोचर हुई।

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

इसीलिए पंडित जी विकेंद्रीकरण तथा विकेन्द्रित व्यवस्था के पक्षधर थे। वे सभी सामाजिक क्षेत्रों के राष्ट्रीयकरण के खिलाफ थे, जिसका राष्ट्रीयकरण तत्कालीन सरकार द्वारा धड़ल्ले से किया जा रहा था। वे जानते थे कि यह देश मेहनतकश लोगों का है, जो अपनी बुनियादी आवश्यकताओं के लिए राज्य पर आश्रित कभी नहीं रहे हैं। पंडित जी ने उन्हीं क्षेत्रों में सरकार को उतरने की सलाह दे रहे थे जिन क्षेत्रों में समाज अथवा निजी क्षेत्र जोखिम नहीं लेते। परंतु तत्कालीन सरकारों के द्वारा इसके प्रतिकूल कार्य किया गया।

उपरोक्त परिस्थितियों में एकात्म मानववाद पं दीनदयाल उपाध्याय की अद्वितीय विशिष्ट एवं मौलिक रचना है। कौटिल्य के अर्थशास्त्र, तिलक के हिन्द स्वराज के पश्चात यह ग्रंथ (एकात्म मानववाद) सिद्धांत के रूप में भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण दर्शन है। पंडित जी ने समकालीन भारत की दुर्दशा का सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक परिस्थितियों का विश्लेषण किया। आज का मानव पूँजीवाद, समाजवाद, मार्क्सवाद, गाँधीवाद जैसे विचारों से अंतर्निहित विडंबनाओं के कारण राष्ट्रीय समस्या का निदान करने में असफल रहा। ऐसी स्थिति में उन्होंने व्यक्ति, परिवार, समाज एवं राष्ट्र का मार्गदर्शन करने में सक्षम, मौलिक तथा सशक्त विकल्प विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। वर्तमान का भारत एकात्म मानववाद में आशा की नई किरण खोज रहा है। एकात्म मानववाद दर्शन, मानव के सामाजिक–आर्थिक तथा मानसिक विकास, राष्ट्रीयता एवं राष्ट्रीय चुनौतियों तथा समकालीन समस्याओं पर होने वाले किसी भी विचार–विमर्श का अनिवार्य अंग बनता जा रहा है। यह दीनदयाल जी के दर्शन को तो स्पष्ट करता ही है, साथ ही वर्तमान भोगवादी संस्कृति में उपजी तमाम आधुनिक विसंगतियों को जानने, समझने तथा उसके निराकरण की कुंजी भी उपलब्ध करवाता है।

एकात्म मानववाद में बड़े ही प्रभावी रूप से प्रमुख मुद्दे हमारे सामने आते हैं। सर्वप्रथम उस समय की राजनीतिक घटनाओं का घटना का घटित होना। दूसरा उपाध्याय जी भारत की शासन–व्यवस्था के विभिन्न अंग–उपांगों का प्रत्यक्ष अनुभव किया, जिसने उनकी पूरी विचार–प्रक्रिया तथा रचना प्रक्रिया को गहराई से प्रभावित किया। तीसरा तत्कालीन सामाजिक –राजनीतिक परिस्थितियों में भारत की प्रगति की दिशा क्या हो सकती है। अंतिम और सबसे प्रमुख मुद्दा था एक नए भारत राष्ट्र का निर्माण करना।

एकात्म मानववाद में इन सभी वैचारिक धाराओं का मिलन होता है और जिसके परिणामस्वरुप एक नवीन तत्त्व का जन्म होता है, जिसके द्वारा उपाध्याय जी स्वातंत्र्योत्तर भारत में विकास के पश्चिमी प्रतिमान के खिलाफ जनजागरण का समर्थन करते हैं। एकात्म

मानववाद, भारतीय सभ्यता में आधुनिक भोगवादी सभ्यता के उदय की समालोचना है। वास्तव में, एकात्म मानववाद संपूर्ण मानव–जीवन के सिद्धांतों की तह को खोलती नजर आ रही है। यह जीवन का एक सिद्धांत है, जो स्थाई ना होकर परिवर्तनशील है। एक नए विकल्प की तलाश में भटक रहा कोई भी सिद्धांत स्थाई हो ही नहीं सकता। वास्तव में, यह एक ऐसा गतिशील दर्शन है, जो उपाध्याय जी के सार्वजनिक जीवन के अनुभवों के साथ–साथ समृद्ध और सुसंस्कृत होता गया। उपाध्याय जी ने हमेशा खासकर एकात्म मानववाद के द्वारा मानव जीवन के मूलभूत प्रश्नों को उठाया है।

एकात्म मानववाद पाश्चात्य सभ्यता के सैद्धांतिक आधार को रचनात्मक चुनौती है। हिंदू–धर्म एवं उसकी समृद्ध परंपराओं से सभ्यतामूलक संसाधनों का भरपूर प्रयोग करते हुए उपाध्याय जी ने औद्योगिक पूंजीवाद, साम्राज्यवाद तथा मार्क्सवाद की आलोचना करने के लिए एक नवीन सैद्धांतिक ढांचे का प्रतिपादन किया। वहीं दूसरी ओर उन्होंने कुछ मौलिक अवधारणाओं, चित्त और वृत्ति का विकास किया, जो वर्तमान समय में काफी प्रासंगिक है।

एकात्म मानववाद को दीनदयाल उपाध्याय की सम्पूर्ण रचनाओं का सार कहा जा सकता है, क्योंकि यह छोटी–सी पुस्तक सिलसिलेवार ढंग से उनके चार महत्त्वपूर्ण भाषणों का संग्रह है, जो उनके चिंतन और विचारों का दर्पण है। एकात्म मानववाद एक ऐसा बीज था, जिससे दीनदयाल उपाध्याय के विचार–रूपी वटवृक्ष का उदय हुआ। दीनदयाल उपाध्याय के विचारों में रुचि रखने वालों के लिए एकात्म मानव–दर्शन की महत्ता सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसी से समस्त समस्याओं का समाधान संभव है। दीनदयाल उपाध्याय के विचारों के अथाह समंदर में गहरे गोता लगाने के इच्छुक साधकों के लिए भी 'एकात्म मानववाद' नामक पुस्तक प्राचीन भारतीय परंपरा को आधुनिक संदर्भ में विश्लेषित करती है। अत्यंत सहज, सरस और सरल भाषा में मानववाद का वैज्ञानिक और दार्शनिक विवेचन तथा व्याख्या करना ही इसका सबसे बड़ा गुण और अद्भुत सौंदर्य है। एकात्म मानववाद की विशिष्टता तथा सौंदर्य इस बात में निहित है कि इसे जितनी भी बार पढेंगे, उतनी ही बार आपको नया अंतर्बोध प्राप्त होगा। वास्तव में, यह एक शास्त्रीय कृति है, जिसका उद्देश्य भारत तथा भारतीयों का पुनरुत्थान करना है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

- 22,23,24,25 अप्रैल 1965 पूना भाषनमाला।
- पं0 दीनदयाल उपाध्याय संपूर्ण बाड़मय (भाग–1) संपादक– डॉ महेशचंद्र शर्मा, प्रभात प्रकाशन।
- एकात्म मानववाद, जागृति प्रकाशन नोएडा।
- लाल रमन बिहारी, 2003, 15वां संस्करण, रस्तोगी पब्लिकेशन।
- ओबेरॉय, सुरेश चंद्रः2005 ''शिक्षा तकनीकी के तत्व एवं प्रबंधन।
- पाठक, पी0डी0 व जी0एस0डी0 त्यागीः2006, ''शिक्षा के सामान्य। सिद्धांत, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–282002